।।सर्व यंत्र सिद्धि हेतु श्रीवर्णेश्वरी देवी भूतलिपि प्रयोग।।

Shri Raj verma ji

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

हमारे सिद्ध ऋषि-मुनियों ने ईश्वरोपासना तथा अभीष्ट सिद्धि हेतु साधना सम्बन्धी जिन-जिन साधनों का निर्माण किया है, उनमें यंत्र-साधना एक सरल, सुगम और भव्य साधन है। यंत्र मंत्रस्वरूप है और मंत्र देवताओं का प्रत्यक्ष विग्रह है। जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई भेद नहीं होता, वैसे ही यंत्र और देवताओं में भी कोई भेद नहीं होता है। यंत्र देवताओं का साक्षात् निवास स्थल है। मंत्रोपासना की भांति यंत्रोपासना से भी षट्कर्मों को सिद्ध किया जा सकता है। यंत्रों के अनेक भेद हैं। जिनका आवश्यकता और परिस्थितिनुसार निर्माण किया जाता है। जैसे पूजास्थल में स्थापित करने वाले श्रीयंत्र आदि, शरीर की रक्षा हेतु धारण किये जाने वाले यंत्र, अभिचारिक कर्म या

कलेश से मुक्ति हेतु घर की दिवारों पर चिपकाने वाले यंत्र, जलाने वाले यंत्र, जमीन में दबाने वाले यंत्र, जल में प्रवाहित करने वाले यंत्र, जल तथा वायु में लिखे जाने वाले यंत्र आदि। इसके अतिरिक्त छत्र-यंत्र, आसन-यंत्र और मण्डल-यंत्र का भी गुप्त प्रकार से प्रयोग किया जाता है। जिस यंत्र को साधना स्थान पर छत्र में, छत में अथवा चंदोवे के अन्दर लिखा जाता है या वस्त्र में रखकर मस्तक पर धारण किया जाता है उसे छत्र-यंत्र कहते हैं। साधना के समय आसन के नीचे बनाये गये यंत्र को आसन-यंत्र कहते हैं। इस यंत्र के माध्यम से तंत्र साधना में शीघ्र सिद्धि मिलती है। कई प्रकार के ऐसे विशेष साम्प्रदायिक अनुष्ठान, जिसमें साधकों के समूह को इस प्रकार बिठाया जाता है, जिससे एक प्रकार के यंत्राकार की रचना हो जाती है। इस व्यूह रचना को ही मण्डल-यंत्र कहा जाता है।

वशीकरण एवं शान्ति-पुष्टि के लिये भोजपत्र, चांदीपत्र या ताम्रपत्र, मारण कर्म में लोहपत्र, स्तम्भन कर्म में पीपल का पत्ता, विद्वेषण हेतु मुर्दे का वस्त्र, आकर्षण के लिये सीसे का पतरा और वैभव तथा राज्य के लिये पलाश के पत्ते या स्वर्णपत्र पर यंत्र का निर्माण करना चाहिये। पुत्र प्राप्ति हेतु पीपल का पत्ता, पत्नी हेतु नागरबेल का पान, धन-यश हेतु कमलपत्र,

मोक्ष प्राप्ति हेतु ताड़पत्र, शांति हेतु मुलहटी के पत्ते का चयन करना चाहिये। देवपूजन में चांदी, स्वर्ण, शालिग्राम शिला और स्फटिक आदि मणियों द्वारा निर्मित यंत्र सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं।

इसके अतिरिक्त काल, दिशा, लेखनी, आसन, स्याही आदि का भी कार्यानुसार ध्यान रखकर यंत्र का निर्माण किया जाता है। जिसका विस्तृत लेखन आगे फिर कभी करुंगा। यहां केवल किसी भी यंत्र की पूर्ण सिद्धि हेतु सभी वर्णों की ईश्वरी, श्रीवर्णेश्वरी देवी की भूतलिपि साधना का वर्णन किया जा रहा है जिसकी साधना के प्रभाव से किसी भी यंत्र का पूर्ण प्रभाव प्रकट होता है। यह भूतलिपि नववर्ग तथा 42 अक्षरों की है।

विनियोगः- ॐ अस्य भूतलिपेर्दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीवर्णेश्वरीदेवता आत्मनो-अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडंगन्यासः- हं यं रं वं लं हृदयाय नमः। डं कं खं घं गं शिरसे स्वाहा। चं छं झं जं शिखायै वषट्। णं टं ठं ढं डं कवचाय हुं। नं तं थं धं दं नेत्रत्रयाय वौषट्। मं पं फं बं अस्त्राय फट्।

वर्णन्यासः- ॐ अं नमः गुदे। ॐ इं नमः लिंगे। ॐ उं नमः नाभौ। ॐ ऋं नमः हृदि। ॐ लृं नमः कण्ठे। ॐ ऐं नमः भ्रूमध्ये। ॐ ऐं नमः ललाटे। ॐ ओं नमः शिरसि। ॐ औं

नमः ब्रह्मरन्धे। ॐ हं नमः ऊर्ध्वमुखे। ॐ यं नमः पूर्वमुखे। ॐ रं नमः दक्षिणमुखे। ॐ वं नमः उत्तरमुखे। ॐ लं नमः पश्चिममुखे। ॐ ङ् नमः हस्ताग्रे। ॐ कं नमः दक्षहस्तमूले। ॐ खं नमः दक्षकूपरे। ॐ घं नमः हस्तांगुलिसंधि। ॐ गं नमः दक्षिणमणिबंधे। ॐ ञं नमः वामहस्ताग्रे। ॐ चं नमः वामहस्तमूले। ॐ छं नमः दक्षकूपरे। ॐ झं नमः वामहस्तांगुलि सन्धौ। ॐ जं नमः वाममणिबंधे। ॐ णं नमः दक्षपादाग्रे। ॐ टं नमः दक्षपादमूले। ॐ ठं नमः दक्षिणजानौ। ॐ ढं नमः दक्षपादांगुलिसंधौ। ॐ डं नमः दक्षिणपादगुल्फे। ॐ नं नमः वामपादाग्रे। ॐ तं नमः वामपादागुल्फे। ॐ थं नमः वामजानौ। ॐ धं नमः वामपादांगुलिसंधौ। ॐ दं नमः वामगुल्फे। ॐ मं नमः उदरे। ॐ पं नमः दक्षिणपार्श्वे। ॐ फं नमः वामपार्श्वे। ॐ भं नमः नाभौ। ॐ बं नमः पृष्ठे। ॐ शं नमः गुह्ये। ॐ षं नमः हृदि। ॐ सं नमः भ्रूमध्ये।

ध्यानम्ः-

अक्षरस्त्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं, विद्यां करैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम्।

अर्धेन्दुमौलिमरुणामरविन्दरामां वर्णेश्वरीं प्रणमतस्तनभारनम्राम।।

भूतलिपि मंत्रः– "अं इं उं ऋं लृं ऐं ऐं ओं औं हं यं रं वं लं ङं कं खं घं गं ञं चं छं झं णं टं ठं ढं डं नं तं थं धं दं मं पं फं भं बं शं षं सं।" (42 अक्षर)

यंत्रगायत्रीः– 'ॐ यंत्रराजाय विद्महे वरप्रदाय धीमहि तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्।'

मातृका वर्णों से ही समस्त मंत्रों का निर्माण हुआ है। समस्त मंत्र वर्णात्मक हैं और मंत्र शक्ति स्वरूप हैं। इन्हीं मंत्रात्मक वर्णों से समस्त विश्व का सृजन हुआ है। मंत्रात्मक अक्षरों को ब्रह्मशब्द कहा जाता है। अतः इनके जागरण से साधना में समस्त प्रकार से आश्चर्यजनक लाभ होता है। इस भूतलिपि वर्णात्मक मंत्र को एक लाख की संख्या में विधिवत् जप कर तत्पश्चात् तिलादि से दशांश होम कर सिद्ध कर लेना चाहिये। भूतलिपि की सिद्धि के पश्चात् सर्व प्रकार के निर्माणित यंत्र अपना सम्पूर्ण प्रभाव दिखाते हैं। इसलिये निर्माणकर्ता विद्वान को यंत्र की सिद्धि हेतु सर्वप्रथम भूतलिपि की उपासना करनी चाहिये। यंत्रगायत्री का भी पर्याप्त संख्या में जप करने से यंत्र चमत्कारिक रूप से फल प्रदान करते हैं।

गुरु मंत्र दीक्षा एवं कार्य सिद्धि हेतु यज्ञ, पूजा एवं अनुष्ठानादि करवाने के लिये सम्पर्क करें-

श्रीराज वर्माजी

9897507933, 7500292413

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

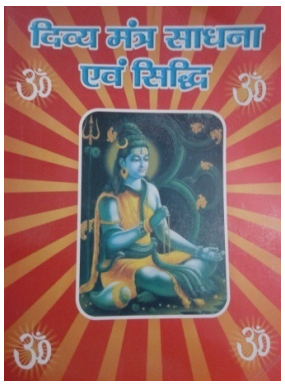

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

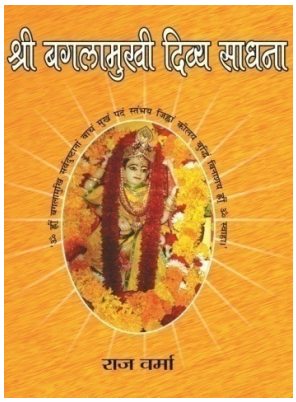

To purchase these books call to Hari Publications.

Mob- 09027154151, 09897035137